

16-संजीवनी विद्या का विस्तार

अध्याय 1: युगसाहित्य का सृजन, जिसे किए बिना कोई गति नहीं

प्रश्न 1: वर्तमान स्कूली शिक्षा की सीमाएँ क्या हैं और इसकी तुलना में किस ज्ञान की अधिक आवश्यकता है?

उत्तर: वर्तमान स्कूली शिक्षा केवल अनावश्यक जानकारीयों देने और नौकरी-स्तर की आजीविका कमाने तक सीमित है। यह व्यक्ति और समाज के सुधार व सृजन के लिए आवश्यक मार्गदर्शन नहीं देती। आज सबसे अधिक आवश्यकता 'विद्या' या 'मेधा' की है, जो हर समस्या का समाधान स्वयं करने में सक्षम होती है और अब उसी का आगमन होने जा रहा है।

प्रश्न 2: युग-शिक्षण के लिए स्कूलों पर निर्भर क्यों नहीं रहा जा सकता?

उत्तर: युग-शिक्षण के लिए स्कूलों पर निर्भर नहीं रहा जा सकता क्योंकि एक तो उनमें आवश्यक विषयों का समावेश नहीं है, और दूसरा यह ज्ञान केवल पुस्तकें रटने से नहीं मिल सकता। इसके लिए प्रत्यक्ष उदाहरणों का प्रेरणादायक माहौल और ऐसे प्राणवान अध्यापक चाहिए जो छात्रों को अपने जैसा प्रतिभावान बना सकें।

प्रश्न 3: युग-शिक्षण के प्रमुख विषय कौन-कौन से हैं?

उत्तर: युग-शिक्षण के प्रमुख विषयों में व्यक्तित्व का विकास, समाज का नवनिर्धारण, सुलभ आजीविका, व्यवहार में शालीनता, परिवार में सुधार, शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य, अवांछनीयता से निपटना, सुखद परिस्थितियाँ बनाना, सहकारिता और सद्भावना बढ़ाना, तथा राजतंत्र और धर्मतंत्र में सुधार शामिल हैं। ये विषय समाज की तात्कालिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आवश्यक हैं।

प्रश्न 4: युगसाहित्य के प्रकाशन और प्रचार-प्रसार में क्या प्रमुख बाधाएँ हैं?

उत्तर: युगसाहित्य के प्रचार-प्रसार में कई बाधाएँ हैं। देश की दो-तिहाई जनता अशिक्षित है। महंगाई के कारण गरीब जनता इसे खरीद नहीं सकती। शिक्षित लोग भी मनोरंजक साहित्य पसंद करते हैं। इसके अतिरिक्त, इसके प्रकाशन में बड़ी पूँजी लगती है और बिक्री की माँग बहुत धीमी रहती है, जिससे इसका विस्तार कठिन हो जाता है।

अध्याय 2: एक लाख अध्यापकों द्वारा विद्या विस्तार का श्रीगणेश

प्रश्न 1: 'झोला पुस्तकालय योजना' क्या है और यह कैसे काम करती है?

उत्तर: यह युगसाहित्य को जन-जन तक पहुँचाने की एक योजना है। इसमें युग-शिल्पी न्यूनतम 20 पैसे प्रतिदिन का अंशदान और दो घंटे का समयदान देते हैं। वे खरीदे गए साहित्य को स्वयं पढ़कर, परिवार को पढ़ाकर या सुनाकर, फिर झोले में रखकर अपने परिचय क्षेत्र के लोगों को बिना मूल्य घर पर पढ़ने के लिए देते हैं।

प्रश्न 2: 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका का विद्या-विस्तार में क्या योगदान है?

उत्तर: 'अखण्ड ज्योति' मिशन की प्रमुख हिन्दी मासिक पत्रिका है, जिसे इसके सूत्र-संचालक अपनी संरचनात्मक संपत्ति मानते हैं। यह लगभग पाँच लाख की संख्या में छपती है और पाठकों को निर्देश है कि हर अंक कम से कम पाँच लोगों द्वारा पढ़ा या सुना जाए। इस प्रकार यह पत्रिका लगभग पच्चीस लाख लोगों तक संजीवनी विद्या का विस्तार करती है।

प्रश्न 3: विद्या-विस्तार के लिए न्यूनतम कितने परिजनों को तैयार करने का विश्वास व्यक्त किया गया है और क्यों?

उत्तर: यह विश्वास किया गया है कि पच्चीस लाख पाठकों में से न्यूनतम एक लाख परिजन तो युगचेतना का आलोक फैलाने के कार्य में अवश्य जुटेंगे। यह विश्वास केवल कल्पना पर आधारित नहीं, बल्कि लगभग अस्सी वर्षों के सेवा-संगठन के अनुभव पर आधारित है कि ये लोग लोकमंगल के लिए प्रतिदिन बीस पैसे और दो-चार घंटे का समय निकाल सकते हैं।

प्रश्न 4: प्रज्ञा-परिजनों के लिए 'एक से पाँच' बनने की प्रक्रिया का क्या महत्व है?

उत्तर: 'एक से पाँच' बनने की प्रक्रिया का अर्थ है कि हर प्रज्ञा-परिजन अपने जैसे पाँच और लोगों को इस आंदोलन से जोड़े। यदि यह गुणन-प्रक्रिया सफल हो जाए, तो कुछ ही चरणों में देश की पूरी जनता को सृजन-चेतना से प्रेरित किया जा सकता है। चूँकि यह आंदोलन सार्वभौमिक है, यह विश्वव्यापी बन सकता है।

अध्याय 3: संजीवनी विद्या को व्यापक बनाया जाए

प्रश्न 1: लेखक के अनुसार समाज के कौन-कौन से वर्ग विद्या-विस्तार में अपना समय दे सकते हैं?

उत्तर: लेखक के अनुसार, सामान्य व्यक्ति भी दिन में चार घंटे परमार्थ के लिए निकाल सकता है। इसके अलावा सरकारी पेंशनर, वे लोग जिनके बच्चे कमाने लगे हैं, सम्पन्न व्यक्ति, साधु-ब्राह्मण, पुरोहित तथा घरेलू कामों से फुर्सत पाने वाली महिलाएँ, विधवाएँ और परित्यक्ताएँ भी युग-धर्म के निर्वाह में अपना समय और योगदान दे सकती हैं।

प्रश्न 2: समाज में आदर्शों के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा क्या है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, समाज में आदर्शों के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा जन-जन पर छाई हुई कृपणता, निष्ठुरता और घिनौनी स्वार्थपरता है। यही शैतानी प्रवृत्ति लोगों को परमार्थ और सेवा-साधना करने से रोकती है। यदि इसे किसी तरह हटाया जा सके, तो कोई भी व्यक्ति युग-अध्यापक की भूमिका निभा सकता है।

प्रश्न 3: प्राचीन काल में संजीवनी विद्या का विस्तार कैसे होता था?

उत्तर: प्राचीन काल में सभी देवालय, गुरुकुल, आश्रम और तीर्थ लोक-शिक्षण का कार्य करते थे। वहाँ रहने वाले ब्रह्मर्षि, राजर्षि और मनीषी आगंतुकों को उनकी योग्यता के अनुसार शिक्षण देते थे, जिससे सामान्य व्यक्ति भी देवमानव के स्तर तक पहुँच जाता था। इस ज्ञान के कारण ही वह युग 'सतयुग' कहलाता था।

अध्याय 4: महाविद्या का उदय और अभ्युदय

प्रश्न 1: 'विद्या' और 'शिक्षा' में क्या मौलिक अंतर बताया गया है?

उत्तर: 'शिक्षा' का संबंध उदरपूर्ति के लिए विभिन्न जानकारीयों को इकट्ठा करने से है, जो स्कूलों-कॉलेजों में दी जाती है। वहीं, 'विद्या' का संबंध आदर्शवादी उत्कृष्टता से है जो साक्षरता की मोहताज नहीं होती और सीधे अंतःकरण में उतर जाती है। विद्या से विवेक, परिष्कृत व्यक्तित्व और प्रतिभा का विकास होता है, जिससे मनुष्य देवमानव बन सकता है।

प्रश्न 2: संजीवनी विद्या को जीवन जीने की कला क्यों कहा गया है?

उत्तर: संजीवनी विद्या को जीवन जीने की कला कहा गया है क्योंकि यह मनुष्य के गुण, कर्म, स्वभाव, चिंतन

और व्यवहार में उत्कृष्टता का समावेश करती है। सुख, शांति और प्रगति के सभी आधार इसी से जुड़े हुए हैं। इसकी उपेक्षा करने पर न तो भौतिक प्रगति संभव है और न ही आध्यात्मिक उन्नति।

प्रश्न 3: विद्या के परोक्ष लाभ क्या हैं?

उत्तर: विद्या के लाभ परोक्ष होते हैं, जैसे विवेक का उभरना, व्यक्तित्व का परिष्कृत होना और प्रतिभा का निखरना। इससे व्यक्ति में शालीनता इतनी बढ़ जाती है कि उसे देवमानव की संज्ञा दी जा सकती है। इसके धारक को आत्मसंतोष, लोकसम्मान और दैवी अनुग्रह प्राप्त होता है, जो भौतिक लाभों से कहीं बढ़कर है।

अध्याय 5: जले दीपक ही बुझों को जलाएँगे

प्रश्न 1: शान्तिकुञ्ज में युगशिल्पियों के प्रशिक्षण की प्रक्रिया क्यों और कैसे तेज की गई?

उत्तर: धीमी गति से चल रहे प्रयासों को रॉकेट जैसी तेजी देने के लिए युगशिल्पियों के प्रशिक्षण की प्रक्रिया तेज की गई, ताकि आगामी वर्षों में लक्ष्य पूरे हो सकें। इसके लिए पिछले वर्ष के नौ-दिवसीय और मासिक सत्रों के स्थान पर अब पाँच-पाँच दिन के सघन प्रशिक्षण सत्र शुरू किए गए, जिससे कम समय में अधिक लोगों को प्राण-चेतना से अनुप्राणित किया जा सके।

प्रश्न 2: लेखक के अनुसार, क्या मनुष्य के सीमित प्रयास विश्व-परिवर्तन जैसे बड़े कार्य कर सकते हैं?

उत्तर: लेखक का मानना है कि मनुष्य की सामर्थ्य सीमित है, लेकिन जब ईश्वरीय शक्ति या नियंता की इच्छा साथ हो तो असंभव भी संभव हो जाता है। जैसे हनुमान, अर्जुन, बुद्ध और गाँधी ने मनुष्य होते हुए भी अलौकिक कार्य किए, उसी प्रकार जब समय साथ देता है तो छोटे आरंभ भी महान परिणाम देते हैं।

प्रश्न 3: "जले दीपक ही बुझों को जलाएँगे" — इस कथन का क्या आशय है?

उत्तर: इस कथन का आशय है कि जिन लोगों के अंदर ज्ञान, प्रेरणा और प्राण-चेतना का दीपक जल रहा है, केवल वही दूसरों को प्रेरित कर सकते हैं। जिस प्रकार एक जलता हुआ दीपक ही बुझे हुए दीपक को जला सकता है, उसी तरह स्वयं प्रशिक्षित और प्राणवान युगशिल्पी ही समाज में नवचेतना का विस्तार कर सकते हैं।

अध्याय 6: मूर्च्छना का पुनर्जागरण अनिवार्य है

प्रश्न 1: प्राचीन काल की शिक्षण व्यवस्था और आज की व्यवस्था में क्या अंतर है?

उत्तर: प्राचीनकाल में पाठशालाओं, गुरुकुलों, आश्रमों और विश्वविद्यालयों का एक सुव्यवस्थित तंत्र था जो बौद्धिक शिक्षा के साथ-साथ व्यावहारिक शालीनता भी सिखाता था। आज वह तंत्र नष्ट हो चुका है और उसकी जगह केवल नौकरी व व्यवसाय से जुड़ी शिक्षा ने ले ली है, जिससे सद्ज्ञान और लोकमानस परिष्कार का कार्य लगभग समाप्त हो गया है।

प्रश्न 2: युग-परिवर्तन के लिए किस प्रकार के प्रशिक्षकों की आवश्यकता है?

उत्तर: युग-परिवर्तन के लिए केवल जानकारी देने वाले प्रशिक्षक नहीं, बल्कि ऐसे प्राण-प्रतिभा सम्पन्न प्रशिक्षक चाहिए जो अपनी प्राण-शक्ति का प्रयोग करके लोगों की उल्टी मान्यताओं और क्रियाओं को बलपूर्वक सीधा कर सकें। उन्हें लोगों की गलतियों को सही मानने की जिद को तोड़कर उन्हें सही मार्ग पर लाना होगा।

प्रश्न 3: "एकला चलो रे" का नारा लेखक ने किस संदर्भ में दिया है?

उत्तर: जब समाज में नवजागरण के स्वर कहीं से नहीं उठ रहे हों और चारों ओर निराशा हो, तब किसी का इंतजार करने के बजाय अकेले ही चल पड़ना चाहिए। बुद्ध, गाँधी, दयानन्द जैसे महापुरुषों ने भी साधन जुटने की प्रतीक्षा नहीं की। इसी संदर्भ में लेखक ने अकेले ही भगीरथ प्रयत्न आरंभ करने के लिए "एकला चलो रे" का नारा दिया है।

अध्याय 7: लोकमानस-परिष्कार का प्रशिक्षण

प्रश्न 1: शान्तिकुञ्ज की व्यय-व्यवस्था कैसे चलती है?

उत्तर: शान्तिकुञ्ज एक साधारण आश्रम है जिसकी व्यय-व्यवस्था सरकारी या किसी अमीर व्यक्ति के अनुदान से नहीं, बल्कि प्रेमी-परिजनों द्वारा प्रतिदिन दिए जाने वाले दस पैसे जैसे छोटे अंशदान और एक घंटे के समयदान से चलती है। इसी श्रद्धा के बल पर यह भारी गाड़ी अपने बलबूते चलती रही है।

प्रश्न 2: शान्तिकुञ्ज में १९९० से कौन-से तीन प्रमुख प्रशिक्षण एक साथ चलाए गए?

उत्तर: वसन्त, 1990 से शान्तिकुञ्ज में तीन प्रशिक्षण एक साथ शुरू हुए:

1. लोकमानस के परिष्कार का आंदोलन (कल्प-प्रक्रिया): भाव-संवेदना उभारने के लिए।
2. महिला जागरण (शक्ति-चेतना): महिलाओं को शिक्षित, स्वावलंबी और सुसंस्कृत बनाने हेतु।
3. साधनात्मक अन्वेषण: मानवीय प्राण-चेतना के उद्दीपन हेतु ब्रह्मवर्चस् में शोध-प्रक्रिया।

प्रश्न 3: प्रशिक्षण के माध्यम से लोकमानस को परिष्कृत करने की क्या योजना है?

उत्तर: योजना के अनुसार, प्रतिवर्ष एक लाख स्थायी पाठकों को प्रशिक्षित किया जाएगा, ताकि पाँच वर्षों में पाँच लाख लोग प्रशिक्षित हो जाएँ। साथ ही, 'एक से पाँच' बनाने का आंदोलन भी चलाया जा रहा है, जिससे ये प्रशिक्षित लोग आगे और लोगों को जोड़ें। इस तरह सवा करोड़ से अधिक सृजन शिल्पी तैयार करने की आशा है, जो समाज को बदल सकें।

अध्याय 8: पंच दिवसीय साधना का स्थूल और सूक्ष्म स्वरूप

प्रश्न 1: शान्तिकुञ्ज के पंच दिवसीय सत्रों में दिए जाने वाले उपदेश क्यों अधिक प्रभावशाली होते हैं?

उत्तर: ये उपदेश इसलिए अधिक प्रभावशाली होते हैं क्योंकि वे केवल सामान्य बोलचाल (बैखरी वाणी) नहीं होते, बल्कि उनके पीछे ऋषिकल्प मनीषी की ऊर्जा और प्राण-चेतना होती है। यह कथन सूक्ष्म (मध्यमा) और कारण (परा) वाणियों के प्रभाव से युक्त होता है, जो सुनने वाले के अंतःकरण की गहराई में उतरकर उसे झकझोरता है और जीवन में बदलाव के लिए विवश करता है।

प्रश्न 2: तपश्चर्या का साधना में क्या महत्व है?

उत्तर: तपश्चर्या से ही सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। तप का अर्थ है आदर्शों के पालन के लिए संयम बरतना और श्रेष्ठता के लिए परिश्रम व त्याग करना। जैसे आग में तपकर धातु शुद्ध और उपयोगी बनती है, उसी प्रकार तप की ऊर्जा से व्यक्ति की सहनशक्ति बढ़ती है और पूर्व-संचित दुष्कर्मों का प्रायश्चित्त होता है, जिससे आत्मिक प्रगति का मार्ग खुलता है।

प्रश्न 3: शान्तिकुञ्ज के वातावरण को साधकों के लिए विशेष लाभकारी क्यों माना गया है?

उत्तर: शान्तिकुञ्ज का वातावरण विशेष लाभकारी है क्योंकि यहाँ गंगा तट, हिमालय की छाया और सप्त-ऋषियों की तपश्चर्या के संस्कार मौजूद हैं। यहाँ के वातावरण में ऐसे दिव्य तत्त्वों का समावेश है जो साधकों को अतिरिक्त अनुदान प्रदान करते हैं। साथ ही, यहाँ दिया जाने वाला सात्विक आहार और ऋषि-युग्म का अदृश्य मार्गदर्शन भी इसे विशेष बनाता है।